मुस्लिम समुदाय में बेरोज़गारी की दर में गिरावट

आम धारणा के विपरीत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के मुस्लिमों में बेरोज़गारी की दर कम हो रही है। राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ) द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार ग्रामीण मुस्लिमों में बेरोज़गारी की दर 2004-05 में 2.3 प्रतिशत से 2009-10 में घटकर 1.9 प्रतिशत रही। शहरी मुस्लिमों में पांच वर्ष की अवधि के दौरान बेरोज़गारी की दर 4.1 प्रतिशत से घटकर 3.2 प्रतिशत हो गई।

भारत की बेरोज़गारी दर को विकसित अर्थव्यवस्थाओं के साथ भ्रमित नहीं करना चाहिए। कृषि जैसे क्षेत्रों में 'प्रच्छन्न बेरोज़गारी'' (जब आवश्यकता से अधिक लोगों को रखा जाता है और कुछ कर्मचारियों के पास कोई काम नहीं होता) और कुछ स्व-नियोजित वर्गों में कम रोज़गार का मुद्दा भी है।

यह आंकड़े व्यक्ति के मुख्य कार्य के साथ-साथ अतिरिक्त गतिविधियों के आधार पर अनुमानित हैं। एनएसएसओ के आंकड़े के अनुसार ग्रामीण हिंदूओं में पांच वर्ष की अवधि के दौरान बेरोज़गारी की दर 1.5 प्रतिशत पर स्थिर रही। ग्रामीण क्षेत्रों में बाकि सभी में गिरावट दर्ज की गई। गांवों में बेरोज़गारी की दर सबसे अधिक ईसाई समुदाय में रही। हालांकि यहां भी बेरोज़गारी की दर 2004-05 में 4.4 प्रतिशत से 2009-10 में घटकर 3.9 प्रतिशत हुई। ग्रामीण सिखों में इसमें भारी गिरावट देखी गई और इस अवधि में यह दर 3.5 प्रतिशत से घटकर 2.4 प्रतिशत रही।

इन आंकडों की गणना एनएसएसओ द्वारा आयोजित 66वें दौर के सर्वेक्षण के आधार पर की गई है। केवल शहरी सिखों में बेरोज़गारी की दर में वृद्धि देखी गई। इस समुदाय में बेरोज़गारी की दर 2004-05 में 4.6 प्रतिशत से 2009-10 में बढ़कर 6.1 प्रतिशत हो गई।

(सौजन्य: बिज़नेस स्टैण्डर्ड)

वर्कशीट

प्रमुख धार्मिक समूहों में बेराज़गारी की दर (%)

■2004-05

•2009-10

	ग्रामीण	शहरी
हिंदू	■ 1.5 %	■ 4.4 %
	• 1.5 %	• 3.4 %
मुस्लिम	■ 2.3 %	■ 4.1 %
	• 1.9 %	• 3.2 %
ईसाई	■ 4.4 %	■ 8.6 %
	• 3.9 %	• 2.9 %
सिख	■ 3.5 %	■ 4.6 %
	• 2.4 %	• 6.1 %

स्रोत: 66वां दौर राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण